साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

प्रयोजनमूलक हिन्दी

शोध आलेख

नाम : नवीन

विषय : प्रयोजनमूलक हिन्दी

E-mail: naveenravit0007@gmail.com

हिन्दी की प्रयोजनमूलकता आज के समय की बड़ी जरूरत है इससे हिन्दी के अध्ययन को नई दिशा मिली है। प्रयोजनमूलक हिन्दी अंग्रेजी के 'फंक्शनल' हिन्दी शब्द का पयार्य है जिसका तात्पर्य एक विशेष शैली युक्त हिन्दी से है। मतलब विशेष शैली आधारित ऐसी हिन्दी जिसका प्रयोग विशेष प्रयोजन के लिए किया जाए। इस शोध पत्र में मौलिक आधार पर संदर्भित तथ्यों के आधार पर प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध आयामों पर विचार किया गया है। ताकि प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप और शैली को समझा जा सके।

संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य के प्रयोजन पर एक पूरी परम्परा मिलती है जिसमें काव्य के विशेष प्रयोजन, उद्देश्य पर विचार किया गया है। ठीक इसी तरह भाषा का भी एक विशेष प्रयोजन केंद्रित स्वरूप होता है। जो शिष्ट उद्देश्य प्राप्ति में सहायक होता है। इस तरह भाषा के प्रयोजनमूलक से तात्पर्य भाषा का वह विशेष रूप जिसका प्रयोग किसी प्रयोजन विशेष या कार्य विशेष के संदर्भ में होता है।

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

संस्कृत की एक उक्ति है, 'प्रयोजनमनुद्रिश्य मन्दोर्नपि न प्रवर्तते' प्रयोजन के बिना मूर्ख व्यक्ति भी कोई कार्य नहीं करता। तात्पर्य यह है कि कोई भी कार्य प्रयोजन से जुड़ा होता है और उस कार्य की सिद्धि में प्रयोजन के साथ–साथ संकल्प और प्रतिबद्धता की भावना निहित होती है। इसी कारण हिन्दी में संभवतः कार्यालीन कामकाज अर्थात् इतर व्यवहार में उसके साथ प्रयोजन शब्द स्वतः जुड़ गया और हिन्दी की संवैधनिक स्थिति स्पष्ट होते ही उसकी प्रयोजनमूलकता को नये सिरे से परिभाषित किया जाता है।

सबसे प्रथम प्रश्न ये आता है कि भाषा के संदर्भ में प्रयोजनमूलकता क्या है? किसी भी भाषा का एक व्यावहारिक स्वरूप होता है और एक मानक स्वरूप होता है। भाषा का ये मानक स्वरूप अन्य प्रयोगगत रूपों से भिन्न होता है। इसी मानक स्वरूप का प्रयोग विशेष प्रयोजन के लिए होता है साथ ही उनका प्रयोग विविध संदर्भों में नहीं बल्कि उसके परिवर्तित रूपों का किया जाता है। भाषा के प्रयोनमूलक परिवर्तन सामाजिक प्रयोगों से प्रतिबंधित होते हैं।

''भाषा का प्रयोग समाज में होता है, लेकिन समाज के संदर्भ हमेशा एक नहीं होते। प्रयोजन के अनुसार, अभिव्यक्ति के अनुसार, परंपरा के अनुसार, समाज परिवर्तन के अनुसार ये बदलते रहते हैं, बैंक का भाषायी स्वरूप, कोर्ट कचहरियों का भाषायी स्वरूप, साहित्य गोष्ठी का भाषायी स्वरूप, भाषायी चरित्र भिन्न–भिन्न होता है। हम पाते हैं कि किसी न किसी रूप में इन सभी भाषायी समाजों की भाषा में कुछ न कुछ भिन्नता है। हिन्दी के संदर्भ में हिन्दी साहित्य और उनकी विभिन्न साहित्यिक विधाएं, संगीत, आभूषणों के बाजारों, सब्जी–कपड़ा बाजारों, समाचार पत्रों, फिल्मों, रेडियो, दूरदर्शन, चिकित्सा, विभिन्न खेलों में प्रयुक्त भाषा में भी विविधता मिलती है।

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

ध्वनि, शब्द, रूप रचना, वाक्य, मुहावरा आदि की दृष्टि से सभी में छोटा–बड़ा अंतर है। अतः ये सारे हिन्दी के अलग–अलग प्रयोजनमूलक रूप हैं जिसे प्रयोजनमूलक हिन्दी के दायरे में समेटा जा सकता है।'[1]

इसमें भाषा की बनावट–संरचना का ही महत्व नहीं, बल्कि उसके प्रयोग व्यवहार का भी अत्यंत महत्व है। व्यवहार के अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग प्रयोजन से हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी के उन सभी अलग–अलग रूपों को ही प्रयोजनमूलक या प्रयोजन आधरित भाषा कहते हैं। हिन्दी के ललित और ज्ञानात्मक पक्ष के अध्ययन में भी प्रयोजन निहित है, लेकिन उसकी प्रयोजनीयता का संबंध रोजमर्रा की दिनचर्या और आजीविका से होता है।

हिन्दी समग्र भारत के अंतर की भाषा है जिसका प्रभाव प्रत्येक भारतीय के दिलो–दिमाग पर छाया है। किन्तु प्रयोजन के विशिष्ट आधार के कारण कहीं न कहीं अंग्रेजी भाषा का मिश्रण भी हिन्दी में हुआ है। अनेक स्थान पर अंग्रेजी ने हिन्दी के मार्ग को अवरूद्ध भी किया है। आज के समय अंग्रेजी प्रयोजन केंद्रित भाषा होती जा रही है। लेकिन जनमानस तक व्याप्त हिन्दी की मौजूदगी तो अवश्य है लेकिन ये दायरा सिकुड़ता जा रहा है।

''एक तरफ तो हम चाहते हैं कि हिन्दी के प्रयोगमूलक, व्यवहारमूलक या कामकाजी द्वार खुले। दूसरी तरफ हम स्वयं निष्क्रिय और अर्कमण्य रहकर निरंतर कार्य करने वालों की आलोचना और दोष–दर्शन करते हुए आलोचक बन बैठते हैं। आज विश्व की दिन–रात हो रही प्रगति में नित्यप्रति हो रही शोध और आलोचना में,

1

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

समय–समय पर खुल रहे भाषागत तथा भाषा के कार्यान्वयनगत आयामों के संदर्भ में हमें युद्ध स्तर पर सक्रिय होना है, तो अंग्रेजी के साथ–साथ जर्मन, फ्रेन्च आदि भाषाओं के माध्यम से भी ज्ञान लेना होगा। उसके चिंतन शोध प्रगति आदि को भी ग्रहण करना होगा।''[1]

प्रयोजनमूलक हिन्दी के फैलाव के लिए प्रयोगिक संगोष्ठियों का आयोजन करना चाहिए उसमें व्यावहारिक नए–नए शब्दों को स्वीकारना चाहिए इससे इतर हिन्दी को स्थापित करने का महत्वपूर्ण उपाय है– प्रशिक्षुओं, प्रतियोगियों, युवा प्रशिक्षकार्थियों आदि के लिए और अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

किसी भी भाषा को जन विश्व भाषा के रूप में ख्याति दिलाना है तो उस भाषा को केवल साहित्य सर्जन तक सीमित न रहकर उसी के प्रयोजनमूलक, व्यावहारिक, प्रशासनिक क्षमता के बारे में भी सोचना जरूरी लगता है।

इस दृष्टि से हिन्दी भाषा विकास के पथ पर है। ''हिन्दी भाषा ने इस दिशा में पहले की तुलना में विगत दस बारह वर्षों में पर्याप्त प्रगति की है। आज व्यावहारिक, समाजिक विज्ञानों में प्रयुक्त, भाषिक व्यापार एवं वाणिज्य में प्रस्तुत, कार्यालयों में, बैंकों में प्रस्तुत, वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र आदि में प्रयुक्त हिन्दी भाषा के कई रूप देखने को मिलते हैं। साहित्यिक एवं शिक्षणपरक रूप के साथ–साथ सृजनात्मक रूप भी उपलब्ध हैं।''[2]

हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक व्यावहारिक प्रयोग पर निरंतर कार्य हो रहा है यही कारण है कि आज की बहुप्रतिष्ठित कम्पनियों को भी हिन्दी की पहुँच का एहसास

1

2

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

हुआ है। हिन्दी के शब्दों को देवनागरी में लिखा जाने लगा है। वहीं विज्ञापनों में हिन्दी भाषा आज भी प्राथमिक है।

''आज भाषा को जीवंत एवं सर्वव्यापी, स्थायी एवं विकासशील बनाने के लिए उन पक्षों और आयामों को जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है, जो मनुष्यों को सीधे रोजगार से भी जोड़े। एक–दूसरे से संबंधी सामग्री का 'अनुवाद' महत्वपर्ण भूमिका निभाता है, किन्तु अनुवाद के साथ ही कामाकाजी हिन्दी के संक्षेपन, पल्लवन, प्रारूपण, टिप्पणी आदि भाषिक पक्ष भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। पत्रकारिता की भाषा, रेडियों की भाषा, समाचार लेखन, अपष्टि भाषाओं के लिखित एंव मौखिक रूप, हिन्दी की संरचना एवं अशुद्धि विश्लेषण, मानक हिन्दी, देवनागरी लिपि का स्वरूप, हिन्दी की बोलियां शैलियां आदि भाषिक प्रयोग के अनुभव रूप पर अग्रसर होते हुए भी हम भाषा की इस अधुनातन आवश्यकता की पूर्ति कर सकते हैं।''[1]

आज बहुत से क्षेत्रों में हिन्दी की नयी संभावनाएं पैदा हो रही हैं। यही कारण है कि आज हिन्दी में समय की मांग के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट भाषा प्रयोग के अनुरूप प्रयोमूलक रूप या परिवर्तित रूप विकसित हो गए हैं, जिनमें प्रमुख हैं– बोलचाल की हिन्दी (काव्यशास्त्र, राजनीति शास्त्र आदि व्यापार संबंधी हिन्दी भाषा ;जिसका संबंध बाजारों, मीडिया से) आदि।

आज के समय व्यावहारिक रूप में प्रचलित और प्रयोग को देखकर कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा अपनी समग्रता की ओर गमन कर रही है। हिन्दी के

[1]

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

व्यावहारिक प्रयोग के साथ–साथ प्रशासनिक प्रयोग के बढ़ने से ही अनेक स्वरूपों में शब्दावलियों का निर्माण हुआ है। वहीं कार्य करने वाली मशीनों को भी हिन्दी अनुरूप बनाया जाने लगा है। हिन्दी के टाइप से लेकर, प्रशासनिक हिन्दी शिक्षण की योजनाओं में गति आई है। राजभाषा संबंधी प्रावधनों, केंद्रीय हिन्दी समिति, शिक्षा विभाग द्वारा भी हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप पर निरंतर प्रयत्न किया जा रहा है। 1968 में 'त्रिभाषा सुझाव'' और संसद संकल्प पत्र इन्हीं प्रयासों का फल है।

निष्कर्षतः हिन्दी ही नहीं किसी भी भाषा की क्रियात्मकता का आधार प्रयोजन धर्म ही होता है। निश्चित रूप में हिन्दी आज भी सच्चे अर्थों में अपने प्रयोजनमूलक स्वरूप के कारण ही बनी हुई है। भाषा के साहित्यिक स्वरूप को ही महत्व दिया जाता है लेकिन भाषा के प्रयोनमूलक स्वरूप की भी अपनी संक्रियात्मक भूमिका होती है। प्रयोजनमूलक भाषा का गत्यात्मक रूप है। गतिमान जीवन में गत्यात्मक भाषा ही जीवित रहती है। क्योंकि अगर भाषा का आधार अगर साहित्य ही होता है तो फिर तो संस्कृत सबसे अधिक प्रभावी होनी थी। लेकिन ऐसा नहीं है। इस तरह हिन्दी भाषा के दूर तक व्याप्त होने और प्रसार पाने के पीछे प्रयोजनमूलक आधार ही है।

संदर्भ सूची –

1. **प्रयोजनमूलक हिन्दी : डॉ. रामगोपाल सिंह, पृष्ठ–12, पार्श्व पब्लिकेशन**
2. **व्यवहारिक हिन्दी : डॉ. पूर्णचंद टंडन, पृष्ठ–2, हिन्दी बुक सेंटर**
3. **प्रयोजनमूलक हिन्दी का अध्ययन : डॉ. सुशीला गुप्ता, पृष्ठ–22, जयभारती पब्लिकेशन**